अथ प्रदोषे दोषज्ञः संवेशाय विशांपतिम् ।

सूनुः सुनृतवाक्स्रष्टुर्विससर्जोर्जितश्रियम् ।।93।।

अन्वय अथ प्रदोषे दोषज्ञः सुनृतवाक् स्रष्टुः सूनुः ऊर्जितश्रियं विशांपतिम् संवेशाय विससर्ज।

अनुवाद तब रात्रि के समय सत्यवादी तथा मधुर भाषी, ब्रह्मा के पुत्र, विद्वान् वशिष्ठ ऋषि ने उत्तम लक्ष्मी से सम्पन्न, प्रजा के स्वामी राजा दिलीप को शयन के लिए आज्ञा दी।

टिप्पणियाँ

प्रदोषे रात्रि के समय, प्रकृष्टदोष (चौर्यादिभयानि) यस्मिन् काले सः प्रदोषः।

दोषज्ञः बुद्धिमान्, समझदार, विद्वान्। देखिए, विद्वान् विपश्चिद्दोषज्ञः अमरकोश।

अर्जितश्रियम् अर्जिता श्री यस्य स तम् (बहुव्रीहि)। जिसका सौभाग्य विशिष्ट था।

संवेशाय 'सम' उपसर्ग पूर्वक विश् धातु का अर्थ होता है-सोना अर्थात् सोने के लिए, निद्रा के लिए।

विशांपतिम् प्रजा के स्वामी (दिलीप) को। विशाम् प्रजा के।

सूनृतवाक् 'प्रियं सत्यं च सूनृतम्' (हलायुधः)। सूनृता वाक् यस्य सः (बहुव्रीहि)। सत्य तथा प्रिय वचन बोलने वाले (वशिष्ठ ऋषि)